E-CONTENT

Subject : Economics
Class : B.A Part I (Paper II : Macro Economics)
Topic : Gold Standard
(स्वर्णमान)

By :
EKATA KUMARI
Guest faculty
(Assistant Proffesor)
Mahila College Sasaram ;
Rohtas
Email I'd :
bhardwajekata@gmail.com

स्वर्णमान से आप क्या समझते हैं और इसके विभिन्न रूपों का वर्णन करें ?

स्वर्णमान :-

कोष

स्वर्णमान के संबंध में अर्थशास्त्रियों ने अपना विचार विभिन्न प्रकार से स्पष्ट किया था। विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने स्वर्णमान के संबंध में भिन्न-भिन्न परिभाषा दी है :-

हैवर्लर के अनुसार :-

स्वर्णमान वह मौद्रिक नीति है जिसमें मानक स्वरूप वाले सिक्के और स्वर्ण पत्र चलन में होते हैं। लेकिन उनके अनुसार इस परिभाषा के संबंध में यह कहा जाता है कि विनिमय के माध्यम के रूप में स्वर्ण सिक्के का क्या मतलब है और स्वर्ण पत्र जारी करने के लिए Gold reserved fund की जरूरत है या नहीं, इस बात की व्याख्या की गई थी।

राबर्टसन के अनुसार :-

स्वर्णमान वह मान है जिसमें मुद्रा की एक इकाई का मूल्य स्वर्ण के ~~की~~ निश्चित मात्रा के मूल्य के बराबर रखा जाता है।

कैमरर के अनुसार :-

स्वर्णमान वह मान है जिसमें मूल्य की इकाई जिसका भुगतान ऋण, मजदूरी और कीमत

में किया जाता है। वे स्वतंत्र स्वर्ण बाजार में स्वर्ण के एक निश्चित राशि के बराबर होती है।

थॉमस के अनुसार :-

स्वर्णमान वह मान है, जिसमें उस देश के कानून के द्वारा उस देश का चलन इकाई का मूल्य सोने के एक निश्चित वजन के आधार पर रखा जाता है और वे सोने में परिवर्तनीय भी होती हैं।

कोलर्बन के अनुसार :-

स्वर्णमान वह मान है जिसमें किसी देश की मुख्य मुद्रा की इकाई निश्चित श्रेणी के स्वर्ण के निर्धारित मात्रा में परिवर्तनीय होती है। इस प्रकार स्वर्णमान के अंतर्गत जितनी भी मुद्राएँ चलन में होती हैं, उन सारी मुद्राओं का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संबंध स्वर्ण से ही होता है। स्वर्णमान के विभिन्न रूप इस प्रकार हैं :-

(*) स्वर्णमान की महत्वपूर्ण विशेषताएँ :-

(i) देश की मुद्रा को स्वर्ण मे ही परिभाषित किया जाता है। मुद्रा का गुण मुद्रा की मात्रा, शुद्धता इन सारी चीजों को स्वर्ण में ही परिभाषित किया जाता है।

(ii) स्वर्ण का आयात - निर्यात स्वतंत्र होता है, और

(iii) स्वर्ण का क्रय - विक्रय भी स्वतंत्र होता है।

(iii) सोने के सिक्के के ढलाई की भी स्वतंत्रता होती है।

(iv) स्वर्णमान के अंतर्गत जितनी भी मुद्राएँ चलन में होती हैं, वह असीमित विधिग्रह होती है। और जितनी भी मुद्राएँ चलन में होती है, वे सारी मुद्राएँ स्वर्ण में ही परिवर्तनीय होती हैं।

स्वर्णमान का दो कांम काफी महत्वपूर्ण है। जैसे :-

(i) आंतरिक मूल्य स्तर में स्थिरता बनाएँ रखना।
(ii) विदेशी विनिमय दर में स्थिरता बनाएँ रखना।

जब हम स्वर्णमान के अंतर्गत स्वर्ण नियम की बात करते हैं, तो कई बातें स्पष्ट हो जाती है। स्वर्णमान का सफलता पूर्वक संचालन करने के लिए कई बातों का होना आवश्यक है :-

(i) खुले बाजार की नीति हो।
(ii) आयात और निर्यात बिलकुल स्वतंत्र हो।
(iii) अर्थव्यवस्था में लोच हो, जिससे मौद्रिक प्रणाली भी लोचदार हो सके।
(iv) सरकारी हस्तक्षेप बिलकुल न हो।
(v) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की प्राप्ति बड़े पैमाने पर हो।

जब इन सारे नियमों को कुशलता पूर्वक लागू किया जाता है, तो स्वर्णमान बिलकुल स्वयं संचालित हो जाती है और बिना सरकारी हस्तक्षेप के आर्थिक क्रियाएँ कुश-

लाता पूर्वक आगे की ओर बढ़ने लगती है और देश का विकास होने लगता है।

स्वर्णमान के विभिन्न रूप :-

स्वर्णमान के विभिन्न रूप होते हैं, जो इस प्रकार होते हैं :-

(I.) स्वर्ण-चलनमान (Gold currency standard)
(II.) स्वर्ण - धातुमान (Gold Bullion standard)
(III.) स्वर्ण - विनिमयमान (Gold exchange standard.)
(IV.) स्वर्ण - निधिमान (Gold reserve standard.)
(V.) स्वर्ण - समतामान (Gold parity standard.)
(VI.) स्वर्ण - घरेलूमान (Gold Demestic standard.)
(VII.) स्वर्ण - अंतर्राष्ट्रीय मान (Gold International standard.)

(I.) स्वर्ण - चलनमान :-

ये मान काफी पुराना मान है। इसे कट्टरवादीमान परंपरावादी मान और संपूर्ण मान भी कहते हैं। प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व स्वर्ण - चलनमान अमेरिका में काफी दिनों तक चला। इस मान की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है :-

(i) सोने के सिक्कों का चलन।
(ii) कागजी मुद्रा और धातुओं अन्य धातुओं के बने सिक्कों का चलन है।
(iii) सोने के सिक्कों की ढलाई स्वतंत्र रूप से होना।
(iv) सोने का आयात - निर्यात क्रय - विक्रय में भी स्वतंत्रता स्वतंत्रता होनी चाहिए।
(v) विनिमय के माध्यम के रूप में स्वर्ण सिक्कों और अन्य मुद्रा का उपयोग करना।

स्वर्ण - चलनमान के गुण :-

(i) ये काफी सरल मान है और इसकी सरलता के कारण ही जनता का विश्वास दिन - प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है । इसके भी कई कारण है :-

(a.) मुद्रा का अंकित मूल्य
(b.) मुद्रा का गर्भित मूल्य
दोनों एक - दूसरे के बराबर होता है (ii) अगर मुद्रा अवमूल्यन कर दिया जाए तभी इस मान में जनता का विश्वास नहीं घटता है क्योंकि सोने के सिक्के को गला कर धातु के रूप में बेचा जा सकता है ।

(iii) इस मान के अंतर्गत जितनी भी मुद्राएँ चलन में होती हैं, उन सारी मुद्राओं का स्वर्ण से संबंध रहता है । Additional currency का creation नहीं होने के कारण मौद्रिक स्थिरता बनी रहती है ।

(iv) यह मान बिना सरकारी हस्तक्षेप के आर्थिक क्रियाओं को संपन्न करता रहता है । विनिमय दर और मूल्य स्तर दोनों में स्थिरता बनाए रखता है ।

स्वर्ण - चलनमान की आलोचना :-

(i) स्वर्ण - चलनमान के संबंध में यह कहा जाता है कि स्वर्ण सिक्के जब चलन में होते हैं, तो उसकी घिसावट के कारण राष्ट्र को अनावश्यक हानी उठानी पड़ती है । अतः आवश्यकता इस बात की है, कि हमें एक economical monetary standard चाहिए । जिससे राष्ट्रीय संपत्ति की क्षति न हो ।

(ii) स्वर्ण - चलनमान वह मान है, जिसमें मौद्रिक प्रणाली पूरी तरह बेलोचदार हो जाता है। अतः हम ये कह सकते हैं, यह मान संकट के समय साथ नहीं देता।

(iii) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के अभाव में यह मान असफल ही हो जाता है। जैसा कि कई बड़े देशों ने स्वर्ण के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था।

(iv) स्वर्ण - कोष के बढ़ जाने के बाद भी मुद्रा का प्रसार नहीं किया था। स्वर्ण कोष की कमी के बाद भी मुद्रा की मात्रा को नहीं घटाया था। यहाँ पर यह मौद्रिक मान स्वतः मान न होकर प्रबंधित मान हो गया था।

अतः ये सारी आलोचनाएँ इस बात को भी साबित करती है कि स्वर्ण - चलनमान में आंतरिक मूल्य स्तर की स्थिरता की जिम्मेदारी ली थी। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि अगर सोने के मूल्य में उतार - चढ़ाव होता रहे तो क्या आंतरिक कीमत स्तर को क्या स्थिर रखा जा सकता है। सोने के मूल्य में कई कारणों से परिवर्तन आता है। जैसे :-

(a) अगर सोने के खान की खोज कर ली गई हो।
(b) सोने के उत्पादन की लागत में परिवर्तन आ गया हो।
(c) सोने के उपयोग में आयात - निर्यात में उसकी मांग और पूर्ति में अगर परिवर्तन आ जाता है तो, सोने की कीमत में परिवर्तन को कोई रोक नहीं सकता है। ऐसी स्थिती में आंतरिक मूल्य स्तर मे स्थिरता को प्राप्त करना बहुत ही कठिन होगा।

इस प्रकार यह कहना कठिन होगा सही है कि managed currency system के माध्यम से विनिमय दर को भी स्थिर बनाना चाहिए। प्रो० जॉन रॉबिन्सन का यह विचार है कि स्वर्ण - चलनमान अर्थव्यवस्था को currency deflation की ओर ले जाएगा। हॉट्रे यह कहना है कि यह मान सारव के नियंत्रण में अराजकता उत्पन्न कर सकता है, इसलिए स्वर्ण - चलनमान की जगह managed currency system ही सही है, इसलिए हम कह सकते हैं कि स्वर्ण - चलनमान सही नहीं है।

(II) मुद्रा मात्रा मान :-

प्रथम विश्व युद्ध के बाद बढ़ती हुई आवश्यकता को पूरा करने के लिए मुद्रा की मात्रा पर्याप्त नहीं थी। इस मूल्य के कारण मौद्रिक नीति पूरी तरह लोचदार नहीं था। जो देश की बढ़ती हुई आवश्यकता के अनुसार मुद्रा की मात्रा को घटाया और बढ़ाया जा सके। अतः इस मान के अंतर्गत दो समस्याएँ काफी गंभीर थी, जो इस प्रकार है :-

पहली समस्या :- सीमित स्वर्ण मान के आधार पर मुद्रा की मात्रा को कैसे कैसे बढ़ाया जाए। और दूसरी समस्या :- मुद्रा की कमी होने पर बढ़ती हुई आवश्यकता को कौसे पूरा किया जाये। अतः इस मान में मुद्रा की मात्रा को बढ़ाने पर बल दिया गया।

मुद्रा मात्रा मान की विशेषताएँ :-

(i) कागजी मुद्रा के पीछे शत - प्रतिशत स्वर्ण नहीं रखा जाता है।

(ii) सोने के सिक्कों की ढ़लाई स्वतंत्र रूप से नहीं होता है।

(iii) सोना का क्रय-विक्रय निर्धारित दर पर ही किया जाता है।

(iv) सोने के आयात-निर्यात पर किसी भी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगाया जाता है। विदेशी भुगतान के लिए भी स्वर्ण प्रदान किये जाते हैं।

(v) इस मान में सीमित स्वर्ण कोष के आधार पर ही देश की मौद्रिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है।

(vi) स्वर्ण का मितव्ययता पूर्वक उपयोग किया जाता है।

(vii) स्वर्ण कोष का उपयोग सार्वजनिक हित में बड़े पैमाने पर किया जाता है।

(viii) इस मान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मौद्रिक प्रणाली लोचदार रहती है।

विदेशी विनिमय दर में स्थिरता की स्थिती बनाई जाती है क्योंकि विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति उसकी खरीद और बिक्री स्वर्ण के आधार पर ही की जाती है। अथवा यह मान पूरी तरह से Automatic है जब मुद्रा की मान हो जाती है और मुद्रा की मान कम हो जाती है और मुद्रा की मान बढ़ जाती है तो स्वर्ण के क्रय-विक्रय के माध्यम से मुद्रा की मांग और पूर्ति को एक-दूसरे के बराबर कर दिया जाता है। यह मान काफी सरल है। इस मान में मौद्रिक प्रणाली पर जनता का विश्वास भी पूरा बना रहता है।

आलोचनाएँ :-

(i) युद्ध के समय या किसी कारण वस अगर देश को ज्यादा से ज्यादा मुद्रा की जरूरत रहती है, तो इसे अचानक बढ़ाना बहुत ही कठिन हो जाता है।

(ii) इस मान में जनता का विश्वास घटता ही चला जाता है, क्योंकि सिर्फ विदेशी भुगतान के लिए ही स्वर्ण प्राप्त होते हैं।

(iii) आलोचकों का यह कहना है कि यह मान Automatic नहीं है, बल्कि यह प्रबंधित प्रणाली है। जिसमें सरकार कागजी मुद्रा हल्की धातु के बने सिक्कों और स्वर्ण कोष को खुद संचालित करती है।

(iv) सरकारी हस्तक्षेप होने के कारण स्वर्ण मात्रा मान का Automatic नहीं कहा जा सकता है।

(v) अतः इस मान का एक बड़ा दोष यह भी है कि स्वर्ण कोष में स्वर्ण बेकार पड़े रहने के कारण राष्ट्रीय विकास में इनका उपादान घट जाता है।

(III.) स्वर्ण - विनिमय मान :-

स्वर्ण विनिमय मान वह मान है, जिसमें आंतरिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए देश की मुद्रा को स्वर्ण में नहीं बदला जाता है। लेकिन विदेशी भुगतान के लिए देश की सरकार यह आश्वासन देती है, कि देश की मुद्रा को एक निश्चित विनिमय दर पर दूसरे देश की मुद्रा से संबंधित कर दिया जाता है, जो स्वर्ण में परिवर्तनीय होती है। इस प्रकार देश की मुद्रा का संबंध स्वर्ण से प्रत्यक्ष रूप से नहीं होता है, बल्कि अप्रत्यक्ष संबंध होता है। स्वर्ण - विनिमय मान वह मान है,

जिस मान में देश की मुद्रा को विदेशी मुद्रा बदलने की जिम्मेदारी सरकार अपने ऊपर लेती है। इस मान में विदेशी मुद्रा के पीछे स्वर्ण कोष नहीं रखा जाता। लेकिन स्वर्ण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यह देश उस देश पर निर्भर करता है। जिस देश की मुद्रा के साथ इस देश की मुद्रा को जोड़ दिया गया है। इस मान के अंतर्गत कोई भी देश अपने कोष का कुछ भाग विदेशी विनिमय के रूप में उस देश में रखता है, जो बाद में चलकर स्वर्ण में परिवर्तनीय हो जाती है।

विशेषताएँ :-

(i) देश में मुद्रा के पीछे स्वर्ण कोष नहीं रखा जाता बल्कि विदेशी विनिमय कोष रखा जाता है।

(ii) विदेशी विनिमय के क्रय - विक्रय के माध्यम से मुद्रा की मात्रा को घटाया बढ़ाया जाता है। अगर देश का भुगतान संतुलन प्रतिकूल हो, तो विदेशी विनिमय को बेच दिया जाता है, जिससे मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है।

(iii) जब देश का भुगतान संतुलन अनुकूल हुआ तो विदेशी विनिमय के क्रय के माध्यम से मुद्रा की मात्रा बढ़ जाती है।

(iv) स्वर्ण - विनिमय मान वह मान है जिसमें मुद्रा का संबंध स्वर्ण से अप्रत्यक्ष रहता है।

(v) विदेशी भुगतान के लिए स्वर्ण दिया जाता है।

(vi) वस्तुओं और सेवाओं की कीमत भी सोने के कीमत के आधार पर ही निर्धारित किया जाता है। और विदेशी भुगतान भी स्वर्ण के कीमत के

आधार पर निर्धारित किया जाता है और कभी-कभी स्वीकृत मुद्रा के आधार पर भी किया जाता है।

(vii) स्वर्ण का बाजार नियंत्रित होता है। कोई भी व्यक्ति स्वतंत्रता पूर्वक स्वर्ण का आयात-निर्यात नहीं कर सकता। इस प्रकार स्वर्ण विनिमयमान के लाभ बहुत ही ज्यादा हैं।

लाभ :-

(i) स्वर्ण विनिमयमान बहुत ही मितव्ययी है।

(ii) मुद्रा के पीछे स्वर्ण कोष नहीं रखने के कारण स्वर्ण की बचत बहुत ज्यादा होती है।

(iii) स्वर्ण का बाजार नियंत्रण होने के कारण स्वर्ण के आयात-निर्यात पर होने वाला खर्च भी बहुत ही कम होता है।

(iv) सरकार की आमदनी बढ़ती ही चली जाती है क्योंकि सरकार अपने कोष का कुछ भाग विदेशी विनिमय के रूप में दूसरे देश में रखता है, जिस पर ब्याज की प्राप्ति होती रहती है।

(v) विदेशी विनिमय के क्रय-विक्रय के बीच अंतर का लाभ सरकार को प्राप्त हो जाता है। विदेशी विनिमय दर में स्थिरता बनी रहती है।

(vi) इस प्रणाली में मुद्रा नीति पूरी तरह से लोचशील होती है।

(vii) अंतर्राष्ट्रीय भुगतान में काफी सुविधाजनक स्थिति हो जाती है और कम से कम स्वर्ण के उपयोग

के बाद भी स्वर्णमान का लाभ प्राप्त कर लिया जाता है।

आलोचनाएँ :-

(i) स्वर्ण विनिमयमान एक ~~अ~~ जटिल मान है। इस जटिलता के कारण जनता का विश्वास इस मान पर बहुत ही कम होता है।

(ii) स्वर्ण विनिमयमान बहुत ही खर्चीला है क्योंकि इसके अंतर्गत स्वर्ण कोष खाता कम रखे जाते हैं। लेकिन कागजी खाता पर ज्यादा से ज्यादा खर्च किया जाता है।

(iii) मौद्रिक नीति भी पूरी तरह से लचीला नहीं होता और देश की मुद्रा दूसरे देश की मुद्रा पर आश्रित हो जाती है।

(iv) मौद्रिक नीति स्वतंत्रता पूर्वक काम नहीं कर पाती और मौद्रिक नीति में संकट की समस्या उत्पन्न होने का भय बना होता है।

(v) इस मान में प्रायः सभी देश दूसरे देश के बैंकों में स्वर्ण कोष रखते हैं। अगर वह बैंक विफल हो जाए तो ऐसी स्थिती में इन देशों को काफी समस्याओं का सामना करना पर सकता है।

IV.) स्वर्ण - निधिमान :-

यह वह मान है जिसका मुख्य उद्देश्य विनिमय दर में स्थिरता लाना था। कई विकसीत देशों ने आपस में मिलकर एक समझौता किया और इस बात पर दबाव डाला गया कि युद्ध से उत्पन्न समस्याओं के निराकरण के लिए

विदेशी विनिमय दर में स्थिरता के लिए स्वर्ण मान निधि को अपनाया जाये।

विशेषताएँ :—

(i) देश की मुद्रा का स्वर्ण से प्रत्यक्ष संबंध नहीं होगा।

(ii) इस मान में विनिमय समानीकरण कोष की स्थापना होगी। इसे हम विनिमय समानीकरण लेखा भी कहेंगे और इसे विनिमय कोष भी कहा जाता है। विनिमय कोष में देश की मुद्रा स्वर्ण मान और अन्य मुद्रा भी शामिल रहेंगी।

(iii) अगर किसी देश के मुद्रा की मान बढ़ती जा रही और उसका मूल्य भी बढ़ता जा रहा है तो उस बढ़ती हुई कीमत को नियंत्रित करने के लिए विनिमय कोष से उस देश की मुद्रा की बिक्री की जाएगी। जिससे मुद्रा की पूर्ति बढ़े और बढ़ती हुई कीमत को नियंत्रित किया जा सके।

(iv) इस मान में स्वर्ण का सीमित उपयोग किया जाता है। कोष की गोपणीयता पर पूरा ध्यान रखा जाता है। अथवा एक कोष से स्वर्ण का हस्तांतरण दूसरे कोष में कितना किया गया है, इसे गोपणीयता रखा जाता है।

इस प्रकार इस मान को इसके मान के अंतर्गत स्वर्ण के आयात - निर्यात की जगह विनिमय कोष के माध्यम से आंतरिक मूल्य स्तर में और विदेशी विनिमय दर में स्थिरता रखी जाती है।

(V.) स्वर्ण - समतामान :-

इस मान के अंतर्गत मुद्रा की एक इकाई का मूल्य स्वर्ण के एक निश्चित मात्रा के बराबर रखा जाता है। इस मान को उस समय अपनाया गया जिस समय IMF की स्थापना हुई थी। मुद्रा की एक इकाई का मूल्य स्वर्ण के एक निश्चित मात्रा के मूल्य के बराबर घोषित किया जाता है। उसी घोषित मूल्य के आधार पर विनिमय दर का निर्धारण भी किया जाता है। स्वर्ण समता मान के अंतर्गत प्रायः सभी देश की मौद्रिक नीति बिल्कुल स्वतंत्र होती है। IMF अपने सदस्य देश को आर्थिक सहायता प्रदान करता है। विनिमय दर में और आंतरिक मूल्य स्तर में स्थिरता बनाई रखी जाती है। इस मान के अंतर्गत घोषित मूल्य का महत्व बहुत ही ज्यादा होता है।

स्वर्ण मान के पतन के कारण :-

जब स्वर्ण मान स्वर्णीय नियम का उल्लंघन किया गया तो स्वर्णमान का पतन हो गया और इसके कई कारण निम्नलिखित हैं :-

स्वर्ण के आयात - निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया गया अस्वतंत्र व्यापार की नीति को समाप्त कर दिया गया था।

आर्थिक क्रियाओं में सरकार का हस्तक्षेप बढ़ता ही जा रहा था।

अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक सहयोग का अभाव हो गया था।

अर्थव्यवस्था लोचहीन हो गई थी।

स्वर्ण मान के पतन का एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि आर्थिक क्रियाओं में सरकार का हस्तक्षेप बढ़ता ही जा रहा था।

स्वर्ण कोष के आधार पर मुद्रा का सृजन नहीं किया जा रहा था।

देश में मौद्रिक प्रणाली काफी जटिल हो गई थी।

स्वर्ण कोष का वितरण असमान हो गया था। अमेरिका और फ्रांस के पास स्वर्ण कोष बढ़ता ही जा रहा था, लेकिन जर्मनी और यूरोप के कई देशों में स्वर्ण कोष की काफी कमी हो गई थी।

स्वर्ण मान का पतन इसलिए हुआ था कि प्रायः सभी देशों में आर्थिक राष्ट्रीयवाद का उदय हुआ था और प्रायः सभी देशों ने यह महसूस किया कि उसे दूसरे देश पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।

प्रथम विश्व युद्ध की क्षती-पूर्ति का भुगतान बड़े पैमाने पर जर्मनी को करना पड़ा। ऐसी स्थिती में जब जर्मनी के पास स्वर्ण कोष की कमी हो गई तो स्वर्ण मान का सफलता पूर्वक संचालन संभव नहीं था।

स्वर्ण मान के अंतर्गत सभी देशों में देश की प्रतिकूल स्थिती को अनुकूल बनाने के लिए पूंजी की छोटी इकाई का उपयोग किया जाता था। लेकिन स्वर्ण के आयात-निर्यात पर लगाये गये प्रतिबंध के साथ-साथ पुंजी की छोटी इकाई के आगमन पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया था। जिसके कारण